

रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 9ए

न्यायाधीश

समीक्षा

IV. डी. न्यायाधीशों की संरचना और सामग्री 2. न्यायाधीशों की पुस्तक के लिए उचित समझ के लिए धार्मिक आधार न्यायाधीश 2:6-3:4

पिछले सप्ताह हम न्यायाधीशों की पुस्तक में थे , और हम रोमन अंक IV पर थे। डी., " न्यायाधीशों की संरचना और सामग्री।" सत्र के ठीक अंत में हमने IV के बारे में बात की थी। डी. 2., "न्यायाधीशों की पुस्तक की उचित समझ के लिए धार्मिक आधार: न्यायाधीश 2:6-3:4।" आपको याद होगा कि मैंने कहा था कि इसमें दो प्रस्तावनाएँ और दो निष्कर्ष थे, यदि आप न्यायाधीशों की पुस्तक की संरचना को देखें। जैसा कि आप अपनी रूपरेखा पर ध्यान देते हैं, पहला परिचय उस अवधि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि थी जिसका वर्णन पुस्तक में आगे किया गया है, न्यायाधीश 1:1-2:5। हमें वहां पता चला कि जनजातियां अपनी जनजातीय संपत्ति में बसने के लिए चली गईं, जैसा कि जोशुआ ने बताया था। जोशुआ की पुस्तक के अंत में, इरादा यह था कि जनजातियाँ बस जाएँगी और अपने क्षेत्र पर विजय प्राप्त करेंगी। उनमें से अधिकांश ने ऐसा नहीं किया, और इसने न्यायाधीशों की पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसके लिए ऐतिहासिक आधार तैयार किया।

लेकिन वह दूसरा परिचय धार्मिक आधार देता है। आपने 2:6 से 3:4 में पढ़ा कि इस्राएल विमुख हो गया और बाल देवताओं की सेवा करने लगा। न्यायियों 2:10 कहता है, “ उस सारी पीढ़ी के अपने पितरों के पास इकट्ठे हो जाने के बाद एक और पीढ़ी बड़ी हुई, जो न तो यहोवा को जानती थी और न जानती थी कि उस ने इस्राएल के लिये क्या किया था। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और बाल देवताओं की उपासना करने लगे।” इसलिये इस्राएली यहोवा से फिर गए और बाल देवताओं की उपासना करने लगे। आप आयत 14 में पढ़ते हैं कि प्रभु ने उन्हें हमलावरों के हाथ में कर दिया जिन्होंने उन्हें लूट लिया, और उन पर अत्याचार होता है। फिर श्लोक 16 में, प्रभु ने उन्हें छुड़ाने के लिए न्यायाधीशों को खड़ा किया। हमारे आखिरी घंटे के अंत में मैंने पाप करने और भगवान से दूर जाने के इस चक्र का उल्लेख किया - बाल पूजा के बाद उत्पीड़न। कभी-कभी आपको चक्र में एक निश्चित पश्चाताप तत्व मिलता है। इस्राएल पश्चाताप करता है या प्रभु की दोहाई

देता है, और तब तुम्हें न्यायाधीश के माध्यम से मुक्ति मिलती है। मैंने पिछले सप्ताह प्रश्न किया था कि क्या तीसरा तत्व वास्तव में पश्चाताप है। यह कुछ ऐसा है जो एक साथ स्पष्ट नहीं है। इस धार्मिक परिचय में

इसका विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। क. न्यायाधीशों का धर्मशास्त्र 1. इस्राएल का धर्मत्याग 2. ईश्वर की विश्वासयोग्यता 3. न्यायाधीशों का चक्र - विद्रोह, प्रतिशोध, पश्चाताप, बचाव

मैंने आपको "न्यायाधीशों का धर्मशास्त्र" नामक एक हैंडआउट दिया था। मैं आपका ध्यान उस अनुच्छेद की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो इस विशेष प्रश्न से संबंधित है, और वह पृष्ठ 833 पर "भगवान की विश्वासयोग्यता" शीर्षक के अंतर्गत है। "ईश्वर की विश्वासयोग्यता," आपने देखा, "धार्मिक विषयों" के अंतर्गत नंबर 2 है। क्रमांक 1. पृष्ठ 831 पर "इज़राइल का धर्मत्याग" है। जहाँ तक पुस्तक के विषयों की बात है, तो आपको इज़राइल का धर्मत्याग मिलता है, लेकिन इसके विपरीत आपको ईश्वर की निष्ठा का स्पष्ट संकेत मिलता है। पृष्ठ 833 के शीर्ष पर उस शीर्षक के तहत, मैंने कहा है, "सभी टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है कि 2:11-19 में प्रस्तावना के भाग दो में उल्लिखित और विभिन्न न्यायाधीशों की कहानियों में दोहराया गया चक्र विद्रोह का है, प्रतिशोध, पश्चाताप और बचाव।" वह चार-तत्व चक्र है - इन्हें चार "आर" के रूप में सोचने से शायद आपको उन्हें याद रखने में मदद मिलेगी: विद्रोह, प्रतिशोध, पश्चाताप और बचाव। हालाँकि, 2:11-19 पर करीब से नज़र डालने पर पता चलेगा कि प्रस्तावना में पश्चाताप का कोई संदर्भ नहीं है। धर्मत्याग के प्रतिशोध का वर्णन 14 और 15 में किया गया है: "उसने उन्हें उनके शत्रुओं को बेच दिया।" लेकिन इसके तुरंत बाद आता है, "लेकिन फिर प्रभु ने न्यायाधीशों को खड़ा किया जिन्होंने उन्हें इन हमलावरों के हाथों से बचाया," श्लोक 16। प्रतिशोध और बचाव के वर्णन के बीच पश्चाताप का कोई संदर्भ नहीं है।

पश्चाताप तत्व जब कोई विभिन्न न्यायाधीशों की कहानियों की ओर मुड़ता है तो ऐसा प्रतीत हो सकता है कि चक्र में पश्चाताप तत्व का सम्मिलन बार-बार आने वाले बयान के आधार पर उचित है कि इस्राएलियों ने "रोया" - ध्यान दें कि यह उद्धरण में है - "प्रभु के लिए" उनके दुख में।" ओलीएल

के समय 3:9 देखें। न्यायियों 3:9 में आप पढ़ते हैं, "परन्तु जब उन्होंने यहोवा की दोहाई दी, तब उस ने उनके लिये एक छुड़ानेवाला खड़ा किया।" इसलिये इस्राएल ने यहोवा की दोहाई दी, और तब यहोवा ने एक छुड़ानेवाले को खड़ा किया। प्रश्न यह उठता है कि प्रभु को पुकारने का क्या मतलब है? क्या इसमें पश्चाताप शामिल है?

चलिए थोड़ा और आगे बढ़ते हैं। 3:9 ओलीएल का समय है। न्यायियों 3:15 एहूद का समय है। तुम वहाँ पढ़ते हो, "इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दोहाई दी, और उस ने गेरा के पुत्र और बिन्यामीनी एहूद को बायें हाथ का एक छुड़ानेवाला दिया।" मैं इन सभी अन्य सन्दर्भों को पढ़ने में समय नहीं लगाऊंगा, लेकिन वह एहूद का समय है। फिर 4:3 में दबोरा का समय, अध्याय 6 और 7 गिदोन के समय और 10:10 यिप्तह के समय का है। मैं न्यायाधीश 10:10 पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि इसमें एक और तत्व शामिल किया गया है। 10:10 में, यिप्तह के समय, आप पढ़ते हैं, "तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी," और ध्यान दें कि इस प्रकार क्या है: "हमने तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है, अपने परमेश्वर को त्यागकर बाल देवताओं की उपासना की है।" न्यायाधीशों 10:10 में पाप की स्वीकारोक्ति का एक स्पष्ट बयान है जो पश्चाताप के बयान जैसा प्रतीत होता है। मैं एक मिनट में उस पर वापस आऊंगा। कुछ टिप्पणीकारों ने यह भी सुझाव दिया है कि प्रस्तावना में बताए गए चक्र और न्यायाधीशों की कहानियों में दर्शाए गए चक्र के बीच यह स्पष्ट विसंगति इस बात का प्रमाण है कि प्रस्तावना और कहानियाँ अलग-अलग लेखकों से आई हैं। दूसरे शब्दों में, यह मुख्यधारा का बाइबिल अध्ययन है जहाँ आपको विभिन्न स्रोतों या परतों के बीच संघर्ष का तनाव मिलता है। "यह निष्कर्ष आंशिक रूप से इस धारणा पर आधारित है कि 'रोने' में आवश्यक रूप से पश्चाताप शामिल होता है। हालाँकि, यह धारणा निश्चित से बहुत दूर है। *ज़ाक*, जो हिब्रू क्रिया 'चीखना' है, के अध्ययन से पता चलता है कि यह गहरे संकट से बाहर निकलने में मदद के लिए रोना है। कुछ उदाहरणों में, रोना पश्चाताप से जुड़ा हो सकता है (देखें 10:10)। लेकिन ऐसे मामलों में, यह केवल उस आशय के कुछ अतिरिक्त बयान के कारण स्पष्ट है। दूसरे शब्दों में, पश्चाताप का विचार *ज़ाक* शब्द में अंतर्निहित नहीं है, "चिल्लाना।"

परमेश्वर की वफ़ादारी पश्चाताप पर निर्भर नहीं है "ऐसा होने पर, यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक

अंतर्दृष्टि की ओर ध्यान आकर्षित करता है। जब यहोवा ने एक उद्धारकर्ता को खड़ा किया तो वह आवश्यक रूप से इस्राएल की ओर से किसी पश्चाताप का जवाब नहीं दे रहा था। यहोवा द्वारा अपने लोगों को बचाने में जो देखा जाता है वह उसकी वाचा की निष्ठा का प्रमाण है।” देखिए, यह ईश्वर की विश्वसनीयता के इस धार्मिक विषय के अंतर्गत है। “यहोवा ने बार-बार अपने लोगों के लिए प्रेम और दया से काम किया और उनके पापों के बावजूद उन्हें राहत देकर उनके दुख और संकट का जवाब दिया।” मुझे ऐसा लगता है कि जब आप इन कहानियों को पढ़ते हैं तो मुख्यतः यही स्थिति होती है। “न्यायाधीशों की पुस्तक से यह स्पष्ट है कि यहोवा के उद्धार योग्य नहीं थे। वास्तव में, ऐसा लगता है कि उत्पीड़न के समय और विश्राम के समय दोनों पश्चाताप की परवाह किए बिना यहोवा द्वारा दिए गए थे। अपनी प्रजा के प्रति उनकी दया बार-बार प्रदर्शित होती थी। उसने उन्हें ज़मीन से बाहर नहीं निकाला, उसने उन्हें नष्ट नहीं किया (जो करने में वह उचित होता), बल्कि दया करके उन्हें बार-बार अपने पास वापस बुलाया।” मुझे नहेमायाह 9.27-28 के पैराग्राफ में पृष्ठ के निचले हिस्से को पढ़ने दें जहां यह कहा गया है, “इसलिए तुमने उन्हें उनके शत्रुओं को सौंप दिया, जिन्होंने उन पर अत्याचार किया। परन्तु जब उन पर अंधेर किया गया, तो उन्होंने तेरी दोहाई दी। तू ने स्वर्ग से उनकी सुन ली, और अपनी बड़ी करुणा से उन्हें छुड़ानेवाले दिए, जिन्होंने उन्हें शत्रुओं के हाथ से बचाया। परन्तु जैसे ही उन्हें विश्राम मिला, उन्होंने फिर वही किया जो तुम्हारी दृष्टि में बुरा था। तब तू ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में छोड़ दिया, और वे उन पर प्रभुता करने लगे। और जब उन्होंने फिर तेरी दोहाई दी, तो तू ने स्वर्ग से सुन लिया, और अपनी करुणा से बारम्बार उनको छुड़ाया। इसलिए मैं यह सोचने में प्रवृत्त हूँ कि पश्चाताप का तत्व हमेशा मौजूद नहीं था। प्रभु दयालु थे और उन्होंने उन्हें बचाया और यह उनके लोगों के प्रति उनकी वाचा की वफादारी का प्रदर्शन था। तो यह सब 2 के अंतर्गत है, “न्यायाधीशों की कहानियों की उचित समझ के लिए धार्मिक आधार।”

3. प्रमुख और छोटे न्यायाधीशों की कहानियाँ संख्या 3. आपकी रूपरेखा पर, “बड़े और छोटे न्यायाधीशों की कहानियाँ” है। 3. ए. “प्रमुख और लघु न्यायाधीश” हैं, यदि आप उस स्लाइड प्रिंट-ऑफ को देखेंगे तो आपको अंधेरे छाया में छह प्रमुख न्यायाधीश दिखाई देंगे: ओथनील, एहुद, डेबोरा, बराक, गिदोन और सैमसन। हल्के छायांकित रंग में, आपके पास छह छोटे न्यायाधीश भी

हैं। तो पुस्तक के मुख्य भाग में छह प्रमुख न्यायाधीशों का उल्लेख है और छह छोटे न्यायाधीशों का उल्लेख है। बड़े और छोटे के बीच का अंतर केवल उन लोगों पर आधारित है जिनके बारे में हमारे पास विस्तृत विवरण हैं और जिनके बारे में हम बहुत कम जानते हैं। यदि आप छोटे न्यायाधीशों के संदर्भों को देखें, तो शमगर 3:31 है; वह एक श्लोक है। यदि आप 3:31 को देखें तो इसमें वह सब कुछ है जो हम शमगर के बारे में जानते हैं, जो है: " एहूद के बाद अनात का पुत्र शमगर आया , जिसने छह सौ पलिशियों को बैलगाड़ी से मार डाला । उन्होंने भी इस्राएल को बचाया।" तो शमगर, तोला, जेयर, इब्ज़ान , एलोन और अब्दोन के साथ हमें उनमें से किसी के बारे में अधिकतम तीन छंद मिले हैं - बहुत कम जानकारी। अन्य न्यायाधीशों के साथ, एहुद बहुत लंबा नहीं है, लेकिन आपके पास दबोरा और बराक के लिए दो अध्याय हैं। आपको गिदोन के लिए तीन अध्याय मिलते हैं। आपको यिप्तह के लिए तीन अध्यायों के भाग मिले हैं और सैमसन के लिए चार या पाँच अध्याय हैं।

न्यायाधीश या उद्धारकर्ता यदि आप इन आख्यानो को पढ़ेंगे तो आप पाएंगे कि अक्सर, पाठ उन्हें न्यायाधीशों के बजाय उद्धारकर्ता कहता है। वास्तव में, आप कह सकते हैं कि पुस्तक का बेहतर शीर्षक "जज" के बजाय "डिलीवरर्स" होगा। सामान्य न्यायिक गतिविधि में शामिल इन व्यक्तियों में से एक का एकमात्र संदर्भ डेबोरा है, जहां आप 4:4 में पढ़ते हैं: " डेबोरा, एक भविष्यवक्ता, लैपिडोथ की पत्नी " - यहां एनआईवी में कहा गया है कि " उस समय इज़राइल का नेतृत्व कर रही थी।" "नेतृत्व करना" क्रिया *शाफ़त का एक रूप है*, "न्याय करना।" तो वह "उस समय इज़राइल का न्याय कर रही थी।" लेकिन फिर पद पाँच में यह कहा गया है, " उसने एप्राइम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच दबोरा के ताड़ के नीचे अदालत लगाई, और इस्राएली अपने विवादों का फैसला कराने के लिए उसके पास आए। " इसलिए उसने अदालत बुलाई और विवादों में मध्यस्थता की। आम तौर पर हम किसी न्यायाधीश के साथ इसी तरह की गतिविधि करते हैं।

जब आप "न्यायाधीश" शब्द सुनते हैं तो आप सोच सकते हैं कि ये सभी लोग अदालतों में रहने वाले किसी न किसी प्रकार के न्यायिक अधिकारी थे। मुझे लगता है कि यह भ्रामक है। *शिन पे* टेटशब्द का उपयोग देखें। मौखिक रूप *shaphat* है, जिससे संज्ञा रूप प्राप्त होता है। यदि आप

इस शब्द के उपयोग को देखें, तो विवादों को निपटाने या अदालत में फैसला सुनाने की न्यायिक गतिविधि के संकीर्ण विचार की तुलना में इसका उपयोग व्यापक है। यदि आप बीडीबी शब्दकोष में मूल को देखें, तो यह कहता है "शासन करना, प्रशासन करना, नेतृत्व करना।" तो ये "न्यायाधीश" वास्तव में आदिवासी शासक या आदिवासी नेता थे। यदि आप देखें कि एनआईवी इसका अनुवाद कैसे करता है, तो आप अक्सर पाएंगे कि वे इसका अनुवाद "न्यायाधीश" के रूप में नहीं बल्कि "नेतृत्व करने के लिए" के रूप में करते हैं। यदि आप 1 शमूएल 8 में भी जाएँ जहाँ इज़राइल एक राजा चाहता है, तो आपको यह शब्द मिलेगा। एनआईवी में 1 शमूएल 8:20 कहता है, "लोगों ने कहा, 'हम अन्य सभी राष्ट्रों की तरह होंगे, हमारा नेतृत्व करने के लिए एक राजा होगा।' " वह *शाफ़त* है, "हमारा नेतृत्व करने वाला राजा।"

इसलिए जैसा कि मैंने बताया, इन न्यायाधीशों को अक्सर "उद्धारकर्ता" कहा जाता है। आइए मैं आपको उस पर कुछ संदर्भ देता हूँ। न्यायियों 3:9 में आपने ओलीएल के बारे में पढ़ा, "जब उन्होंने यहोवा की दोहाई दी, तब उस ने उनके लिथे खड़ा किया" - यह न्यायी नहीं कहता, यह "उद्धारकर्ता" कहता है। वह *यशा* से है, "बचाना" या "उद्धारित करना।" यदि आप एहूद के साथ 3:15 को देखते हैं, तो यह कहता है, "इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी, और उस ने उन्हें एक छुड़ानेवाला दिया।" न्यायाधीशों 6:14-15 को देखें - यह गिदोन के साथ है: "प्रभु ने उसकी ओर मुड़कर कहा, 'तुम्हारे पास जो शक्ति है उसमें जाओ और इस्राएल को मिद्यान के हाथ से छुड़ाओ'" - इस्राएल को बचाओ, *यशा*। न्यायियों 6:36 में भी यही बात है; 7:2; 10:12-14 और कुछ अन्य स्थान भी। तो इनमें से छह प्रमुख आदिवासी नेता या न्यायाधीश हैं, और छह छोटे हैं।

बी. चार उत्कृष्ट न्यायाधीशों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ

बी . आपकी रूपरेखा में है, "चार उत्कृष्ट न्यायाधीशों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ।" जिन चार को मैंने सूचीबद्ध किया है वे दबोरा और बराक, गिदोन, यिप्तह और सैमसन हैं। तो पहले, दबोरा और बराक, जिनका वर्णन न्यायाधीश 4 और 5 में किया गया है। आपने 4:5 में पढ़ा कि "दबोरा, एक भविष्यवक्ता उस समय इसराइल का नेतृत्व कर रही थी। वह एप्रेम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेतेल के बीच दबोरा के ताड़ के पेड़ के नीचे दरबार लगाती थी।"

अतः वह एप्रैम के गोत्र से है। श्लोक 6 में कहा गया है कि उसने बराक को बुलाया, जो नप्ताली के गोत्र से था, और उससे कहा कि वह नप्ताली और जबूलून के 10,000 पुरुषों को ले और ताबोर पर्वत पर जाए, जैसा कि यहोवा ने आदेश दिया था: "मैं याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को लुभाऊँगा" - याबीन एक कनानी राजा था, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तरी शहर हासोर में शासन करता था - "और मैं उसे उसके रथों और सैनिकों के साथ कीशोन नदी पर ले जाऊँगा और उसे तुम्हारे हाथों में दे दूँगा।" वह नप्ताली को बताती है कि प्रभु ने क्या कहा है, लेकिन बराक अनिच्छुक है और वह पद 6 में कहता है, "यदि तुम मेरे साथ चलो तो मैं जाऊँगा, लेकिन यदि तुम नहीं जाओगे, तो मैं नहीं जाऊँगा।" वह कहती है, "मैं तुम्हारे साथ चलूँगी, लेकिन जिस तरह से तुम ऐसा कर रहे हो, उसके कारण सम्मान तुम्हारा नहीं रहेगा; क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के हाथ में कर देगा।" मुझे लगता है कि कथा के उस बिंदु पर, यह उम्मीद जगी है कि डेबोरा बराक के साथ जाने वाली है और वह वही होगी जो इज़राइल को जीत की ओर ले जाएगी। वह वही है जिसे प्रभु सीसरा को सौंप देगा। लेकिन जैसा कि आप आगे पढ़ते हैं, पद 13 में आप पाते हैं, सीसरा के पास 900 रथ, एक शक्तिशाली सेना है। याद रखें, इस्राएलियों के पास रथ नहीं हैं। परन्तु पद 14 में डेबोरा बराक से कहती है, "जाओ! यही वह दिन है जब यहोवा ने सीसरा को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। क्या यहोवा तुझ से आगे नहीं गया?" तो यहोवा दिव्य योद्धा है, जो कनान को इस्राएल के हाथों में दे रहा है। और फिर आप आयत 15 पढ़ते हैं, "यहोवा ने सीसरा और उसके सभी रथों और सेना को तलवार से मार डाला, और सीसरा अपना रथ छोड़कर पैदल भाग गया।"

इसलिए वह भागने की कोशिश कर रहा है और उसे एक तंबू मिल गया है। आप आयत 17 में पढ़ते हैं, "वह पैदल ही हेबेर केनी की पत्नी याएल के डेरे की ओर भाग गया, क्योंकि हासोर के राजा याबीन और केनी हेबेर के वंश के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे।" वह बाहर जाती है और उसका बहुत आदर सत्कार करती है, उसने कहा कि वह प्यासा है। पद 19,

वह कहता है, "मुझे थोड़ा पानी दो," और वह उसे थोड़ा दूध देती है। वह तंबू में जाता है और उससे कहता है, पद 20, यदि कोई पूछने आए कि क्या यहाँ कोई है, तो कहो "नहीं।" और तब तुम्हें पता चलेगा कि यहोवा सीसरा को किसके हाथों में सौंपता है: यह याएल है। आपने श्लोक 21 में पढ़ा, यह दबोरा नहीं है, "लेकिन हेबर की पत्नी जैल ने एक तंबू की खूंटी और एक हथौड़ा उठाया और चुपचाप उसके पास चली गई, जबकि वह थका हुआ गहरी नींद में सो रहा था। उसने खूंटी को उसके मंदिर के माध्यम से जमीन में गाड़ दिया और वह मर गया। तो आपने पद 23 में पढ़ा, "उस दिन परमेश्वर ने [यह नहीं कहता कि याएल ने याबीन को वश में किया, परन्तु परमेश्वर ने] इस्राएलियों से पहले कनानी राजा याबीन को वश में कर लिया।" तो यह दबोरा और बराक की कहानी है जिनका उपयोग यहोवा ने इस्राएल को कनानियों के उत्पीड़न से छुड़ाने के लिए किया था।

वह अध्याय 4 है। सी अध्याय 5 इसी घटना का एक काव्यात्मक वर्णन है। हम अध्याय 5 को पढ़ने के लिए समय नहीं लेंगे, लेकिन यह साहित्य का एक सुंदर टुकड़ा है जहां डेबोरा और बराक जीत का गीत गाते हैं। मैं श्लोक 24 को पढ़ना चाहता हूं और आपको अध्याय 5 के बारे में कुछ जानकारी देना चाहता हूं। आप 5:24 में पढ़ते हैं, "महिलाओं में सबसे धन्य जैल है, जो केनी हेबर की पत्नी है, तंबू में रहने वाली महिलाओं में सबसे अधिक धन्य है।" . उसने पानी माँगा, और उसने उसे दूध दिया; वह रईसों के लिए उपयुक्त कटोरे में उसके लिए फटा हुआ दूध ले आई। उसका हाथ तंबू की खूंटी तक पहुंच गया, उसका दाहिना हाथ कारीगर के हथौड़े तक पहुंच गया। उसने सीसरा को मारा, उसका सिर कुचल डाला, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उसकी कनपटी में छेद कर दिया। " आपको यह काव्यात्मक समानता मिलती है जो इसे और भी सशक्त कृति बनाती है। "उसके चरणों में वह डूब गया, वह गिर गया, वह वहीं पड़ा रहा। उसके चरणों में वह डूबा, वह गिरा, जहां वह डूबा, वहां वह गिरा, मृत।"

5:28 में दृश्य बदल जाता है, और यह सीसरा की माँ के घर वापस चला जाता है। "सीसरा की माँ ने खिड़की से झाँककर देखा; जाली के पीछे से वह चिल्ला उठी, 'उसके रथ को आने में इतनी देर क्यों हो रही है? उनके रथों की गड़गड़ाहट में देरी क्यों हो रही है?' [वह चिंतित है।]

उसकी सबसे बुद्धिमान महिलाएँ उसे उत्तर देती हैं; वह अपने आप से कहती रहती है, क्या वे लूट का माल ढूँढ़कर बांट नहीं रहे हैं? हर एक पुरुष के लिथे एक या दो लड़कियाँ, सीसरा के लिथे रंग बिरंगे वस्त्र, कढ़ाई किए हुए रंगबिरंगे वस्त्र, मेरे गले के लिथे ऊँचे कढ़ाईवाले वस्त्र, यह सब लूट ही है? ' बेशक, विडंबना यह है कि वह वापस नहीं आ रहा है और ऐसा नहीं हो रहा है। तो अंतिम श्लोक कहता है, " ऐसे ही तेरे सभी शत्रु नष्ट हो जाएं, हे प्रभु! परन्तु जो तुझ से प्रेम रखते हैं वे सूर्य के समान हो जाएं जब वह अपनी शक्ति के साथ उदय होता है। और देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।" तो यह कनानी उत्पीड़न और मुक्ति की पहली कहानी है जिसमें प्रभु इस्राएल को छुड़ाने के लिए डेबोरा और बराक का उपयोग करते हैं।

2. गिदोन

दूसरी कहानी न्यायाधीश 6-8 में है, और वह गिदोन है। इस बार उत्पीड़क मिद्यानवासी हैं जो रेगिस्तान के खानाबदोश थे। वे संभवतः यरदन के पार दक्षिण और पूर्व से आये और इस्राएल के नगरों को लूट लिया। गिदोन ओप्रा नामक स्थान से आया था। आप श्लोक 11 में देखेंगे, "प्रभु का दूत आया और ओप्रा में उस बांज वृक्ष के नीचे बैठ गया जो अबीएजेरी योआश का था, जहां उसका पुत्र गिदोन गेहूं को मिद्यानियों से बचाने के लिये दाखमधु के कुण्ड में दबा रहा था।" ओप्रा का स्थान विवादित है और स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता है। लेकिन अधिकांश इसे मनश्शे और एप्रेम की सीमा के पास रखते हैं, जो फिर से एक उत्तरी आदिवासी क्षेत्र है। प्रभु 6:12 में गिदोन से कहते हैं, " जब यहोवा का दूत गिदोन को दिखाई दिया, तो उसने कहा, 'हे पराक्रमी योद्धा, यहोवा तुम्हारे साथ है।'" गिदोन को प्रभु के दूत के साथ इस आदान-प्रदान पर संदेह है, इसलिए वह कहता है, " परन्तु श्रीमान, यदि यहोवा हमारे साथ है, तो यह सब हमारे साथ क्यों हुआ? उसके वे सब आश्चर्यकर्म कहाँ हैं जिनके विषय हमारे पुरखाओं ने हम से तब कहा था, जब उन्होंने कहा, क्या यहोवा ने हम को मिस्र से निकाल नहीं निकाला? परन्तु अब यहोवा ने हम को त्यागकर मिद्यानियों के वश में कर दिया है।' और यहोवा ने उसकी ओर फिरकर कहा, जो शक्ति तेरे पास है उस में जाकर इस्राएल को मिद्यान के हाथ से छुड़ाओ। क्या मैं तुम्हें नहीं भेज रहा हूँ?" तो कमीशन है। गिदोन विरोध करता है। पद 15 में, गिदोन कहता है, "मैं इस्राएल को कैसे बचा सकता हूँ? मेरा वंश मनश्शे

में सबसे कमज़ोर है और मैं अपने परिवार में सबसे छोटा हूँ।' यहोवा कहता है, 'मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम सब मिद्यानियों को एक साथ मार डालोगे।'"

लेकिन गिदोन के लिए यह अभी भी पर्याप्त नहीं है। 6:17 में ध्यान दें, गिदोन उत्तर देता है, "यदि अब मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हुई है, तो मुझे एक चिन्ह दे।" दूसरे शब्दों में, मैं कुछ प्रदर्शन चाहता हूँ कि आप जो कह रहे हैं वह वास्तव में घटित होने वाला है। अतः यहोवा उसे एक चिन्ह देता है। गिदोन एक वेदी पर एक बलिदान तैयार करता है और आप श्लोक 21 में पढ़ते हैं कि "प्रभु के दूत ने मांस और अखमीरी रोटी को छुआ, और चट्टान से आग निकली और मांस और रोटी को भस्म कर दिया।" श्लोक 22 कहता है, "जब गिदोन को पता चला कि यह यहोवा का दूत है, तो उसने कहा, 'आह, प्रभु यहोवा! मैंने यहोवा के दूत को आमने-सामने देखा है!'" अब स्वर्गदूत ने उससे कहा कि वह अपने पिता की बाल की वेदी को गिरा दे। उसके पिता के पास बाल की वेदी थी, यह श्लोक 25 में है; उसने अशेरा नाम खम्भे को काट डाला। गिदोन रात में ऐसा करता है, आपने श्लोक 27 में पढ़ा है। और उसके बाद, श्लोक 36 पर जाएं। "गिदोन ने परमेश्वर से कहा, 'यदि तू अपने वादे के अनुसार इस्राएल को मेरे हाथ से बचाएगा'—परमेश्वर का वचन अभी भी पर्याप्त नहीं था। वह आगे कहता है, "ठीक है, मैं खलिहान पर एक ऊनी ऊन रखूंगा। यदि ओस केवल ऊन पर पड़े, और सारी भूमि सूखी हो, तो मैं जान लूंगा कि तू अपने कहने के अनुसार मेरे द्वारा इस्राएल को बचाएगा।" तब वह दूसरा चिन्ह चाहता है। "और वही हुआ। अगले दिन गिदोन जल्दी उठ गया; उसने ऊन को निचोड़ा और ओस को निचोड़ा - एक कटोरा भर पानी। तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, मुझ पर क्रोध न कर। मुझे बस एक और अनुरोध करने दीजिए। ऊन के साथ मुझे एक और परीक्षण करने की इजाजत दें। इस बार ऊन को सूखा और भूमि को ओस से ढक देना।' उस रात भगवान ने वैसा ही किया। केवल ऊन सूखा था; सारी भूमि ओस से ढकी हुई थी।"

फिर से , डैन बलोच - जिसका मैंने पिछले सप्ताह न्यू अमेरिकन कमेंट्री सीरीज़ में जजों पर अपनी पुस्तक में उल्लेख किया था - पृष्ठ 272 पर उस ऊनी अंश पर उनकी कुछ दिलचस्प टिप्पणियाँ हैं। वे श्लोक 36 और उसके बाद के बारे में कहते हैं, "ये छंद पाठक को पूरी तरह से आकर्षित करते हैं आश्चर्य। भले ही गिदोन को यहोवा द्वारा शक्ति दी गई है और

वह सैनिकों की एक विशाल सेना से घिरा हुआ है, फिर भी वह झिझकता है। वह संकेतों की मांग के साथ भगवान का परीक्षण करना जारी रखता है - विशेष रूप से यह आश्वासन देने के लिए कि भगवान वास्तव में राष्ट्र के लिए मुक्ति प्रदान करने के लिए अपने सैनिकों का उपयोग करेंगे जैसा कि उन्होंने वादा किया है: '...यदि आप अपने वादे के अनुसार मेरे हाथों से इज़राइल को बचाएंगे।' बाद की अभिव्यक्ति जो श्लोक 36-37 में दो बार आती है, इस पाठ की कुंजी है। और फिर वह यह टिप्पणी करता है—मुझे लगता है कि यह उचित है। वह कहते हैं, "लोकप्रिय व्याख्या के विपरीत, इस पाठ का ईश्वर की इच्छा की खोज या निर्धारण से कोई लेना-देना नहीं है।" आपने कितनी बार लोगों को यह कहते हुए सुना है, "मैं गिदोन की ऊन को बाहर निकालने जा रहा हूँ—मैं यह देखने जा रहा हूँ कि क्या प्रभु ऐसा करेंगे, तब मैं ऐसा करने के लिए उनकी इच्छा देख सकता हूँ।" बलोच जो कह रहा है वह यह है, "इसका ईश्वर की इच्छा की खोज या निर्धारण से कोई लेना-देना नहीं है। उनके मन में ईश्वरीय इच्छा बिल्कुल स्पष्ट है।" वह जानता है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। "गिदोन की समस्या यह है कि ईश्वर के साथ अपने सीमित अनुभव के कारण, वह यह विश्वास नहीं कर सकता कि ईश्वर हमेशा अपना वचन पूरा करता है।" भगवान ने वादा किया था, लेकिन वह विश्वास करने को तैयार नहीं थे। "संकेतों का अनुरोध विश्वास का नहीं बल्कि अविश्वास का प्रतीक है। ईश्वर की इच्छा के बारे में स्पष्ट होने के बावजूद, ईश्वर की आत्मा से सशक्त होने के बावजूद, अपने देशवासियों की भारी प्रतिक्रिया से दैवीय रूप से चुने गए नेता के रूप में पुष्टि होने के बावजूद, युद्ध के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के लिए, वह प्रयास करने और बाहर निकलने के लिए उपलब्ध हर साधन का उपयोग करता है। जिस मिशन के लिए उसे बुलाया गया है। ऐसा लगता है कि इस ऊन के साथ यही हो रहा है। परन्तु यह काम नहीं करता क्योंकि गिदोन के साथ व्यवहार में प्रभु बहुत सहनशील है।" भगवान गिदोन के अनुरोध को स्वीकार करते हैं और ऐसा करते हैं। लेकिन गिदोन इस मामले में बेहद अनिच्छुक योद्धा है।

चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ चपड़ के उन तीन सौ मनुष्यों के द्वारा मैं तुझे बचाऊँगा, और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर दूँगा।”

तो इन सबका उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि जब जीत आती है, तो यह भगवान ही है जिसने जीत दिलाई है। तब वे रात को मिद्यानी डेरे में गए। आप आयत 16 में पढ़ते हैं, “उसने तीन सौ आदमियों को तीन टुकड़ियों में बाँटकर उन सबके हाथों में तुरहियाँ और खाली घड़े दिए, और भीतर मशालें रखीं। ‘मुझे देखो,’ उसने उनसे कहा। ‘मेरी बात का अनुसरण करो। जब मैं शिविर के किनारे पहुँच जाऊँ, तो ठीक वैसा ही करना जैसा मैं करता हूँ। जब मैं और मेरे सब संगी तुरहियाँ फूँकें, तब छावनी के चारों ओर से तुरहियाँ फूँकना, और चिल्लाना, यहोवा और गिदोन के लिये।” और तुम न्यायियों 7:19 में पढ़ते हो, “उन्होंने तुरहियाँ फूँकीं, और उनके हाथ में जो घड़े थे, उन्हें तोड़ डाला।” परिणाम यह हुआ कि मिद्यानी भ्रमित हो गए और एक-दूसरे से लड़ने लगे, जिसके परिणामस्वरूप इज़राइल की जीत हुई।

अध्याय 8 में मिद्यानियों के नेता जिनके नाम जेबह और सल्मुन्ना थे, भाग गए। गिदोन और उसकी सेना ने उनका पीछा किया, और आपने अध्याय 8 के श्लोक 12 में पढ़ा कि उन्होंने उन्हें पकड़ लिया। रास्ते में, वे सुक्कोथ नामक स्थान पर गए। यह दिलचस्प है कि पद 5 में गिदोन ने सुक्कोथ के लोगों से कहा, “मेरे सैनिकों को कुछ रोटी दो; वे घिसे हुए हैं। मैं अब भी मिद्यान के राजाओं जेबह और सल्मुन्ना का पीछा कर रहा हूँ।” सुक्कोथ के लोगों को नहीं पता था कि इसका परिणाम क्या होने वाला है। वे स्वयं को गिदोन के साथ जोड़ने वाले नहीं थे। तो आप श्लोक 6 में पढ़ते हैं, “सुक्कोथ के हाकिमों ने कहा, ‘क्या जेबह और सल्मुन्ना का हाथ पहले से ही तुम्हारे वश में है? हम आपके सैनिकों को रोटी क्यों दें?’” उन्हें डर था कि जेबह और ज़लमुन्ना भाग कर वापस आ जायेंगे, और अगर उन्हें पता चला कि सुक्कोथ के लोगों ने गिदोन और उसके लोगों की मदद की है, तो जेबा और ज़लमुन्ना उनसे बदला लेंगे। इसलिए उन्होंने मदद नहीं की। परन्तु गिदोन और उसके लोगों ने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया। फिर पद 13 में आप ध्यान दें कि जब वे लौटे, तो गिदोन ने सुक्कोथ के एक जवान को पकड़ा और उससे पूछताछ की। उस युवक ने उसके लिए सुक्कोथ के 77 हाकिमों, अर्थात् नगर के पुरनियों के नाम लिखे। अब, इसके बारे में दो बातें। वह सुक्कोथ के लोगों को जाने नहीं देगा। गिदोन वापस जाता है और रास्ते में उसकी मदद नहीं करने

के बारे में बताता है। लेकिन यहां दिलचस्प बात यह है कि उसे सिर्फ एक यादृच्छिक व्यक्ति मिलता है जो नाम लिख सकता है - ये साक्षर लोग थे! ऐसा लगता है जैसे उस समय लिखना एक आम बात थी।

आप श्लोक 16 में पढ़ते हैं, " उसने नगर के पुरनियों को लिया और सुक्कोथ के लोगों को रेगिस्तान के कांटों और झाड़ियों से दंडित करके सबक सिखाया।" तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने उन्हें कोड़ों, कांटों और झाड़ियों से पीटा। "...उसने पेनियल की मीनार को भी गिरा दिया और शहर के लोगों को मार डाला।" वहां आपको आश्चर्य होगा कि क्या यह अत्यधिक नहीं था। अब, ये कनानी नहीं हैं; ये इस्राएली थे। ऐसा लगता है कि शायद वह वहां बहुत दूर तक चला गया था।

परन्तु 21बी में आपने पढ़ा कि गिदोन ने जेबा और सल्मुन्ना को भी मार डाला और उनके ऊंटों के गले से उनके आभूषण उतार लिए। तो यह वह विजय है जो यहोवा ने गिदोन के नेतृत्व में थोड़ी सी सेना के साथ इस्राएल को दी थी।

उस जीत के बाद, श्लोक 22 और 23 में क्या होता है, इस पर ध्यान दें, क्योंकि मुझे लगता है कि वे दो श्लोक महत्वपूर्ण हैं। मैं बाद में उनके पास वापस आऊंगा। आपने वहां पढ़ा, " इस्राएलियों ने गिदोन से कहा, 'हम पर शासन करो - तुम, अपने बेटे और अपने पोते ...'" दूसरे शब्दों में, एक राजवंश स्थापित करें। क्यों? " ...क्योंकि तू ने हमें मिद्यान के हाथ से बचाया है ।" गिदोन की प्रतिक्रिया पूरी तरह से उचित प्रतिक्रिया थी। आयत 23 में, " गिदोन ने उनसे कहा, 'मैं तुम पर प्रभुता न करूंगा, और न मेरा पुत्र तुम पर प्रभुता करेगा। यहोवा तुम पर शासन करेगा ।" मुझे लगता है कि गिदोन समझता है कि वहां क्या हो रहा है। लोग जीत का श्रेय उन्हीं को दे रहे हैं। वह भली-भांति जानता है कि जीत दिलाने वाला वह नहीं था। यह प्रभु ही था जिसने विजय प्राप्त की थी, और इसलिए वह उन पर शासन नहीं करने वाला था। यहोवा उन पर शासन करेगा। यदि आप न्यायियों 7:2 पर वापस जाते हैं, तो आप वहां पढ़ते हैं, ठीक इसकी शुरुआत में, कि प्रभु ने गिदोन से कहा, "तुम्हारे हाथ में बहुत सारे लोग हैं। इसलिये कि इस्राएल मेरे विरुद्ध यह घमण्ड न करे कि उसके ही बल ने उसे बचाया है, अपने पास के सैनिकों की गिनती कम कर दे।"

अब गिदोन की इस कहानी का एक और उपसंहार है। यद्यपि गिदोन ही वह व्यक्ति था जिसने वह नेतृत्व प्रदान किया जिसने यह जीत दिलाई, गिदोन ने बाद में अपने जीवन में,

इसराइल को किसी न किसी रूप में मूर्तिपूजा की ओर प्रेरित किया। वह एक त्रुटिपूर्ण नेता थे। आपने श्लोक 24 में पढ़ा कि गिदोन ने कहा, "मेरी एक विनती है, कि तुम में से हर एक अपनी लूट में से एक एक बाली मुझे दे।" ऐसा करके उन्हें खुशी हुई। तो आपने श्लोक 26 में पढ़ा कि उसने 1,700 शेकेल सोना एकत्र किया। और फिर आप पद 27 में पढ़ते हैं, "गिदोन ने सोने से एक एपोद बनवाया, जिसे उस ने अपने नगर ओप्रा में रखा। समस्त इस्राएल ने इसकी पूजा करके व्यभिचार किया। और यह गिदोन और उसके परिवार के लिए फंदा बन गया।"

अब यह कहता है, कि उस ने इस सोने से एक एपोद बनाया। यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि यह क्या था। बाइबिल में "एफ़ोद" शब्द का उपयोग महायाजक द्वारा पहने जाने वाले एक परिधान से जुड़ा है जिसे बनाना बहुत महंगा था। एपोद बनाने के निर्देश निर्गमन 28:6-12 में हैं। क्या यह एपोद महायाजक द्वारा पहने गए वस्त्र के समान था? एपोद के संबंध में उसकी जेबों में उरीम और तुम्मीम महायाजक के पास रहते थे। उरीम और तुम्मीम दिव्य दैवज्ञ प्राप्त करने के साधन थे। क्या गिदोन दिव्य दैवज्ञ प्राप्त करने के लिए कोई वैकल्पिक, नाजायज साधन चाहता था? कुछ लोग सोचते हैं कि यह वैसा ही था, और अन्य सोचते हैं कि यहाँ एपोद किसी प्रकार की छवि का संदर्भ है। डैन बलोच ने अपनी टिप्पणी में सुझाव दिया है कि यह भाषण का एक अलंकार है जिसे सिनेकडोचे कहा जाता है जिसमें भाग संपूर्ण के लिए खड़ा होता है। इस व्याख्या में एपोद सिर्फ एक परिधान का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि किसी प्रकार की छवि के परिधान का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह उस छवि का भी प्रतीक है, जिसके ऊपर परिधान लपेटा गया था। इसलिए यह छवि इस्राएल के लिए एक मूर्ति और पूजा की वस्तु बन गई। अतः यह अस्पष्ट है; हम बिल्कुल निश्चित नहीं हैं कि गिदोन ने यहां क्या किया और इसका उद्देश्य क्या था। लेकिन परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है। आपने श्लोक 27बी में पढ़ा, "सभी इस्राएल ने इस एपोद की पूजा करके अपना व्यभिचार किया।" इसलिये गिदोन ने इस्राएल को भटका दिया।

अबीमेलेक और राजत्व

अध्याय 8, श्लोक 30-31 के अंत में , उनके पुत्र अबीमेलेक का संदर्भ है जो अगले अध्याय में प्राथमिक व्यक्ति बन जाता है। आपने आयत 31 में पढ़ा कि गिदोन की उपपत्नी जो शकेम में रहती थी, उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उसने अबीमेलेक रखा। गिदोन बहुत बुढ़ापे में मर गया, और उसे अबीएजेरियों के ओप्रा में उसके पिता योआश की कब्र पर दफनाया गया। जैसे ही गिदोन मर गया, इस्राएलियों ने फिर से बाल देवताओं के प्रति व्यभिचार करना शुरू कर दिया।

तो, गिदोन का पुत्र अबीमेलेक अध्याय 9 का विषय है। मैं पूरे अध्याय को पढ़ने के लिए समय नहीं लेने जा रहा हूँ। अबीमेलेक शकेम का राजा बन गया, और इसका परिणाम अंततः शकेम का विनाश और अबीमेलेक की मृत्यु थी। तो गिदोन की कहानी का परिणाम बहुत मिश्रित है। वे मिद्यानियों से छुड़ाए गए, और गिदोन कहता है, मैं तुम पर प्रभुता नहीं करूंगा, यहोवा तुम पर प्रभुता करेगा। अच्छी बात है। परन्तु परिणाम किसी न किसी रूप में मूर्तिपूजा के रूप में निकला। और फिर गिदोन का बेटा कनान देश के कनानी शहर-राज्य राजाओं की छवि में एक "राजा" बन गया, और इससे आपदा भी आई।

3. यिप्तह और उसकी प्रतिज्ञा

तीसरा न्यायाधीश जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह न्यायाधीश 10:6-12:7 में यिप्तह है। इस मामले में, इस्राएल अम्मोनियों द्वारा उत्पीड़ित है। आप 10:6 में पढ़ते हैं, “ फिर इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। वे बाल देवताओं , अशतोरेत देवताओं , अराम के देवताओं, सीदोन के देवताओं, मोआब के देवताओं, अम्मोनियों के देवताओं, और पलिशतियों के देवताओं की उपासना करते थे। और चूँकि इस्राएलियों ने यहोवा को त्याग दिया और उसकी सेवा फिर न की, इस कारण वह उन पर क्रोधित हुआ। उसने उन्हें पलिशतियों और अम्मोनियों के हाथ में बेच दिया, और उन्होंने उसी वर्ष उन्हें चूर-चूर कर दिया। अठारह वर्ष तक वे एमोरियों के देश

गिलाद में यरदन के पूर्व की ओर के सब इस्राएलियोंपर अन्धेर करते रहे । तो आप देश के उत्तर और पूर्व में हैं, प्राथमिक समस्या जॉर्डन नदी के पूर्व में गिलियड में है।

उस समय इस्राएल के पुरनियों ने यिप्तह को इस्राएल से निर्वासित करने के लिये टोब नामक स्थान में भेजा। वह टोब में रह रहा था, जो उसी सामान्य क्षेत्र में रामोथ गिलियड के पूर्व उत्तर-पूर्व में एक शहर था । आपने 11:1 में पढ़ा, “वह एक शक्तिशाली योद्धा था। उसका पिता गिलाद था, उसकी माँ वेश्या थी, और वह बहिष्कृत हो गया।” तो आपने श्लोक 3 में पढ़ा कि वह भाग गया और टोब की भूमि में बस गया। फिर, पद 5 में, गिलाद के पुरनियों ने उसके पास भेजा और उसे अपनी सेना का सेनापति बनने के लिए कहा ताकि वे अम्मोनियों से लड़ सकें। यिप्तह उनके साथ मोलभाव करना चाहता है। आयत 9 में यिप्तह कहता है, “ मान लीजिए कि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने के लिए वापस ले जाओ और यहोवा उन्हें मुझे दे दे—क्या मैं सचमुच तुम्हारा मुखिया बनूँगा?” गिलाद के पुरनियों ने उत्तर दिया, यहोवा हमारा गवाह है; आप जैसा कहेंगे हम अवश्य वैसा ही करेंगे।” इसलिये यिप्तह गिलाद के पुरनियों के संग चला, और लोगों ने उसे अपना प्रधान और प्रधान नियुक्त किया । और इसलिए वह अम्मोनियों से लड़ने का यह कार्य करता है। सबसे पहले वह कुछ वार्ताकारों को भेजता है जो उनके साथ बात करते हैं, वास्तव में यह तर्क देते हैं कि अम्मोनियों का उस भूमि पर कोई ऐतिहासिक दावा नहीं है जिस पर वे कब्जा कर रहे थे। अध्याय 11 के अगले भाग से श्लोक 27 तक, आपने पढ़ा कि अम्मोन के राजा ने यिप्तह द्वारा उसे भेजे गए संदेश पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसलिए यिप्तह ने उनसे लड़ने के लिए इस्राएली सेना को इकट्ठा करने का फैसला किया, लेकिन ऐसा करने से पहले उसने एक प्रतिज्ञा की। यह वह चीज़ है जो संभवतः जेफ्थाह के बारे में सबसे प्रसिद्ध है । आप 11:30 में पढ़ते हैं, “ और यिप्तह ने यहोवा से मन्त्रत मानी: 'यदि तू अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे, तो जब मैं अम्मोनियों के बीच से विजयी होकर लौटूँगा, तब जो कोई मुझ से मिलने के लिये मेरे घर के द्वार से निकलेगा, वही होगा।'” यहोवा का, और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊँगा।” खैर, वह लड़ने के लिए बाहर जाता है, और वह अम्मोनियों पर विजयी होता है। आप श्लोक 34 में पढ़ते हैं, “ जब यिप्तह मिस्या में अपने घर लौटा, तो उसकी बेटी के अलावा कौन उससे मिलने के लिए डफ की धुन पर नाचता हुआ आया?” वह इकलौती संतान थी। उसके अलावा उसका न तो कोई बेटा था और न ही बेटी। जब उसने उसे देखा, तो उसने अपने

कपड़े फाड़ दिए और चिल्लाया, 'ओह! मेरी बेटी! तू ने मुझे दुखी और अभागा कर दिया है, क्योंकि मैं ने यहोवा की ऐसी मन्नत मानी है जिसे मैं तोड़ नहीं सकता।' वह कहती है, 'तू ने यहोवा को अपना वचन दे दिया है। अब तू अपने वचन के अनुसार ही मेरे साथ कर, क्योंकि यहोवा ने तेरे शत्रु अम्मोनियों से बदला ले लिया है। लेकिन मुझे यह एक अनुरोध दीजिए,' उसने कहा। 'मुझे पहाड़ों पर घूमने और अपने दोस्तों के साथ रोने के लिए दो महीने का समय दीजिए, क्योंकि मैं कभी शादी नहीं करूंगा।' उन्होंने कहा, 'आप जा सकते हैं।' और उसने उसे दो महीने के लिए जाने दिया। दो महीने के बाद, वह अपने पिता के पास लौट आई और उसने उससे अपनी मन्नत के अनुसार ही किया। ”

इसलिए मुझे लगता है कि इसे पढ़ने का सबसे उचित तरीका यह है कि यिप्तह ने वह प्रतिज्ञा की और उसे निभाया; मन्नत पूरी करने के लिए उन्होंने अपनी बेटी की बलि दे दी। उस समझ पर कुछ लोगों द्वारा विवाद किया गया है, लेकिन मुझे लगता है कि यह पाठ को पढ़ने की सबसे अधिक संभावना है। पृष्ठ के नीचे पृष्ठ 55 पर अपने उद्धरण देखें। यह टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट श्रृंखला में कुंडल और मॉरिस द्वारा जज और रूथ पर टिप्पणी से लिया गया है। वे टिप्पणी करते हैं, "यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि यिप्तह के मन में एक पशु बलि थी और जब उसकी बेटी उसका स्वागत करने आई तो वह आश्चर्यचकित रह गया, लेकिन इन्हें पदनाम के बाद से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है 'जो कोई भी मेरे दरवाजे से बाहर आता है 'हाउस' का तात्पर्य इच्छित मानव बलि से होना चाहिए। यह निश्चित है कि इसका उद्देश्य जेफथा की ओर से भक्ति का कार्य था, जो उसके माध्यम से भगवान के कार्यों का प्रतिफल था। लेकिन अगर वह मूसा की परंपराओं से बेहतर वाकिफ होता, तो उसे पता होता कि भगवान इस तरह से सम्मानित होने की इच्छा नहीं रखते। दूसरों का जीवन पवित्र है, इसे निजी उद्देश्यों के लिए समाप्त नहीं किया जाना चाहिए, चाहे वह अंत कितना भी प्रशंसनीय क्यों न लगे। जैसा कि बिशप हॉल ने कहा, 'यह प्रतिज्ञा करने का उनका उत्साह था और बिना सोचे-समझे प्रतिज्ञा करना उनका पाप था।'"

हालाँकि, पृष्ठ 56 पर दूसरे पैराग्राफ को देखें: “पहले के सभी टिप्पणीकारों और इतिहासकारों ने स्वीकार किया कि यिप्तह ने वास्तव में अपनी बेटी को होमबलि के रूप में अर्पित किया था। मध्य युग तक ऐसा नहीं था कि पाठ के स्पष्ट अर्थ को नरम करने के लिए अच्छे अर्थ वाले

लेकिन गुमराह करने वाले प्रयास किए गए थे। प्रबुद्ध दिमागों की संवेदनशीलता ऐसे कार्यों से चौंक सकती है, खासकर इज़राइल के न्यायाधीशों में से एक द्वारा। लेकिन मौत की सज़ा को हमेशा के लिए कौमार्य में बदलने की कोशिश को कायम नहीं रखा जा सकता है।" कुछ लोगों ने यही तर्क दिया है कि सतत कौमार्य दंड था, उसका जीवन नहीं। "जेफ्था की बेटी की कौमार्य का अंतिम संदर्भ मामले की त्रासदी को इंगित करने के लिए जोड़ा गया है, और पूर्ण काल को प्लुपरफेक्ट के रूप में लिया जाना सबसे अच्छा है, एक प्रयोग जो अक्सर हिब्रू में होता है, 'उसके पास कोई नहीं था।' यह स्पष्ट कथन कि 'उसने उसके साथ अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार किया जो उसने खाई थी,' को कायम रहने दिया जाना चाहिए।' मार्टिन लूथर ने कहा, "कोई यह कहना चाहेगा कि उसने अपनी बेटी की पेशकश नहीं की, लेकिन पाठ स्पष्ट रूप से कहता है कि उसने ऐसा किया।" मुझे ऐसा लगता है कि इसे पढ़ने का यही सबसे स्पष्ट तरीका है। कुछ लोग जो यह तर्क देते हैं कि उसने उसे अर्पित नहीं किया, श्लोक 31 पढ़ते हैं जिसमें कहा गया है, "जब मैं अम्मोनियों से विजयी होकर लौटूंगा तो जो कोई मुझसे मिलने के लिए मेरे घर के द्वार से बाहर आएगा वह प्रभु का होगा," और तब आपको एक आश्चर्य होता है, जिसका एनआईवी अनुवाद करता है "और मैं उन्हें होमबलि के रूप में बलिदान करूंगा।" कुछ लोग उस शब्द का अनुवाद "या" के रूप में करने का प्रयास करते हैं: "जब मैं अम्मोनियों से विजय प्राप्त करके लौटूंगा तो जो कोई भी मुझसे मिलने के लिए मेरे घर से निकलेगा वह प्रभु का होगा" - दूसरे शब्दों में, "यदि कोई इंसान है, तो वह होगा भगवान को समर्पित, या यदि यह एक जानवर है - भेड़, बकरी, मुर्गी, या कुछ भी - मैं इसे होमबलि के रूप में बलिदान करूंगा। लेकिन यह बाकी संदर्भ के साथ ठीक से फिट नहीं बैठता है, और यह मूल को पढ़ने का एक तनावपूर्ण तरीका है।

4. सैमसन - वेब का आरटीआर आर्टिकल जिस अगले जज के बारे में मैं चर्चा करना चाहता हूं वह सैमसन हैं। वह न्यायाधीश 13:1-16:31 है, इसलिए अध्याय 13-16। मैंने सोचा था कि सैमसन के लिए मैं पाठ पर काम करने के बजाय आपको यह हैंडआउट दूंगा। यह एक लेख का एक संक्षिप्त बायोडाटा है जो मुझे लगता है कि काफी अच्छा है, जिसे बैरी वेब ने *रिफॉर्म थियोलॉजिकल रिव्यू* में लिखा है, "सैमसन स्टोरी का एक गंभीर पाठ" कहा जाता है। मैं बस लेख का एक प्रकार का

सारांश देने का प्रयास करूँगा। वेब कहते हैं, “सैमसन की कहानी कई ईसाई धर्म प्रचारकों के लिए शर्मिंदगी की बात है। वे उसे परमेश्वर का वचन मानना चाहते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि यह कैसे करें। सैमसन की कहानी उस तरह की नैतिकता को आसानी से प्रस्तुत नहीं करती है जो कि इंजील पल्पिट्स और संडे स्कूल के पाठों में काफी आम है। अब यदि आप बाइबल के पात्रों से जीवन जीने के लिए उदाहरण प्राप्त करने जा रहे हैं तो संभवतः आप उन्हें खोजने के लिए सैमसन के पास नहीं जाएंगे, या कम से कम बहुत अधिक बिंदुओं के लिए नहीं, लेकिन हो सकता है कि कुछ। विकल्प यह है कि इसे तुच्छ बना दिया जाए और सैमसन को बाइबिल के सुपरमैन के रूप में देखा जाए, या इसे अनदेखा कर दिया जाए। अंतिम परिवर्तन संभवतः सबसे आम है।”

वेब एक गंभीर अध्ययन का आह्वान करता है जो सैमसन की कहानी के अनिवार्य रूप से धार्मिक चरित्र को पहचानता है, और यह समझता है कि यह अपने विहित संदर्भ में कैसे कार्य करता है। उन्होंने नोट किया कि कहानी छह प्रमुख न्यायाधीशों के मुख्य केंद्रीय खंड के अंत में, न्यायाधीशों की पुस्तक में एक रणनीतिक स्थान रखती है। इस पर बहुत ध्यान दिया गया है- इसमें चार अध्याय हैं। इस कथा की स्थिति और सैमसन को दी गई जगह की मात्रा के कारण, वेब का तर्क है, “यदि हम इस प्रकरण का एक बिंदु चूक जाते हैं, तो हम जजों की पूरी किताब का बिंदु चूक सकते हैं।”

एक। पहला आंदोलन जहां तक कथा की संरचना का सवाल है, वेब का तर्क है कि यह तीन आंदोलनों में सामने आता है। सबसे पहले, एक स्वर्गदूत भविष्यवाणी करता है: एक बाँझ महिला एक बेटे को जन्म देगी। यह न्यायियों 13:2 में है जहाँ आप पढ़ते हैं, “ दानियों के कुल में से मानोह नाम सोरावासी एक मनुष्य की एक पत्नी थी जो बाँझ थी और निःसन्तान थी। यहोवा के दूत ने उसे [मानोहा की पत्नी] दर्शन देकर कहा, 'तू बाँझ और निःसन्तान है, परन्तु तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा।' ' और दूसरी भविष्यवाणी: पुत्र इस्राएल को पलिशियों से छुड़ाना शुरू करेगा। आपने इसे श्लोक 12 में पढ़ा। अंतिम वाक्यांश, “वह पलिशियों के हाथों से इस्राएल को छुड़ाने की शुरुआत करेगा।”

पहली भविष्यवाणी 13:1-4 में पूरी होती है, जहाँ आप पढ़ते हैं, “स्त्री ने एक लड़के को जन्म

दिया और उसका नाम शिमशोन रखा।" दूसरी भविष्यवाणी, "वह पलिशतियों से मुक्ति की शुरुआत करेगा," अध्याय 14 से 16 तक फैले दो प्रमुख कथा आंदोलनों में उत्तरोत्तर देखा जाता है।

उन दो आंदोलनों में से पहला, कथा के तीन आंदोलनों में से दूसरे नंबर पर है। सैमसन तिम्रा जाता है जहां उसे एक पलिशती लड़की से प्यार हो जाता है—आपने इसे 14:1 में पढ़ा है। शिमशोन तिम्रा को गया, और वहां एक युवा पलिशती स्त्री को देखा, और अपने माता-पिता के पास लौटकर कहा, "उसे मेरी पत्नी के रूप में मेरे लिये ले आओ।" वह आंदोलन 15:14-20 में रामोत लेही के पलिशतियों के वध में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। न्यायियों 15:14-20 में आपने पढ़ा कि प्रभु की आत्मा शिमशोन पर आती है। वह उन बंधनों को तोड़ देता है जिनसे वह बंधा हुआ था और गधे के जबड़े की हड्डी निकालता है और एक हजार आदमियों को मार गिराता है। यहोवा से बात करते हुए, वह कहता है, "गधे के जबड़े की हड्डी से मैं ने पलिशतियों के गधे बनाए हैं; आपने अपने सेवक को यह विजय दिलाई है।" तो वह पहला आंदोलन रामोथ लेही

में वध में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। बी। दूसरा आंदोलन दूसरा आंदोलन न्यायियों 16:1 में सैमसन के गाजा जाने से शुरू होता है जहां वह एक वेश्या से मिलता है। वह आंदोलन दागोन के मंदिर में पलिशतियों के वध के साथ चरम पर पहुँचता है, जहाँ वह खंभों को तोड़ता है और अपनी मृत्यु में न्यायियों 16:30 में अपने जीवन की तुलना में अधिक लोगों को मारता है। इसमें कहा गया है, "शिमशोन ने कहा, 'मुझे पलिशतियों के साथ मरने दो।'" तब उसने अपनी सारी शक्ति से धक्का दिया, और मन्दिर शासकों और उसमें के सभी लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार उसने जीवित रहने की अपेक्षा मरने पर बहुतांश को मार डाला।

न्यायाधीश 13:25 और 16:31 में ज़ोराह और एशताओल के संदर्भ इन दो आंदोलनों को वर्गीकृत करते हैं। अब यह सिर्फ एक साहित्यिक विशेषता है जिसे आप कह सकते हैं कि यह कथा की संरचना का हिस्सा है। आप 13:25 में देखते हैं, "जब वह सोरा और एशताओल के बीच महने दान में था, तब यहोवा की आत्मा ने उसे उभारना आरम्भ किया।" उस संदर्भ को ज़ोराह और एशताओल के बीच रखें। 16:31 में अंत में, "वे उसे वापस ले आए और सोरा और एशताओल के बीच दफनाया गया।" तो आप देखते हैं कि ज़ोराह और एशताओल ने अध्याय 14 से लेकर अध्याय

16 के अंत तक के अंश को ब्रेकेट में रखा है। इसलिए वे सैमसन कथा में उन दो आंदोलनों को ब्रेकेट में रखते हैं। सैमसन के पिता मानोह का संदर्भ भी पूरी कथा को रेखांकित करता है। यदि आप न्यायियों 13:2 में कथा की शुरुआत पर वापस जाते हैं, तो यह कहता है, "जोरा का एक निश्चित व्यक्ति जिसका नाम मानोह था।" फिर पूरी कथा के अंत में 16:31 पर जाएँ: "उसे उसके पिता मानोह की कब्र में दफनाया गया था।" ये कथा में आंतरिक संरचना तत्व हैं। इसलिए मुझे लगता है कि वह कथा में तीन आंदोलनों के लिए एक अच्छा मामला बनाता है।

सी। सैमसन और नाज़ीर प्रतिज्ञा फिर ये आगे की टिप्पणियाँ: "सैमसन नाज़ीर।" नाज़िराइट यह परिभाषित करता है कि सैमसन ईश्वरीय दृढ़ संकल्प से क्या था। अध्याय 13 पर वापस जाएँ जहाँ उसके जन्म की घोषणा की गई थी। पद 5 में आप पढ़ते हैं कि प्रभु का दूत कहता है, "उसके सिर पर उस्तरा न चलाया जाए, क्योंकि लड़का नाज़ीर होगा, जन्म से ही परमेश्वर के लिए अलग रखा जाएगा, और वह इस्राएल को उसके हाथ से छुड़ाने का काम आरम्भ करेगा।" पलिशियों का . इसलिए उसे अपने पूरे जीवन-जन्म से लेकर अब तक नाज़ीर बनना था। अब, उस पर कुछ टिप्पणियाँ। वह स्वैच्छिक नाज़ीर नहीं है। हमने नाज़ीर की भूमिका पर ध्यान दिया है, जो अस्थायी अवधि के लिए एक स्वैच्छिक प्रतिज्ञा थी। सैमसन की स्थिति उससे भिन्न है, क्योंकि यह स्वैच्छिक या अस्थायी नहीं है; वह स्वैच्छिक प्रतिज्ञा से नहीं बल्कि ईश्वरीय निर्णय से नाज़ीर है। अभिषेक की अवधि अस्थायी नहीं, बल्कि उसके पूरे जीवन के लिए होती है। जब उसे रिहा किया जाता है तो न केवल उसके बालों की बलि दी जाती है, जिस तरह से नाज़ीर प्रतिज्ञा को समाप्त किया गया था, बल्कि स्वयं सैमसन, उसके पूरे व्यक्तित्व की बलि चढ़ायी जाती है। जैसे ही कहानी सामने आती है, सैमसन वह सब कुछ करता है जो एक नाज़ीर को नहीं करना चाहिए: वह शवों को छूता है, शराब पीता है, और अपने बाल काट देता है। वह नाज़ीर के सभी प्रावधानों के विरुद्ध जाता है। न्यायियों 16:17 में वह कहता है, "... क्योंकि मैं जन्म से ही परमेश्वर के लिए अलग किया गया एक नाज़ीर रहा हूँ। यदि मेरा सिर मुंडवा दिया जाए तो मेरी ताकत चली जाएगी और मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह कमजोर हो जाऊंगा।" कोई उस अंतिम वाक्यांश पर ध्यान आकर्षित करता है, "किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह बनो।" इससे पता चलता है कि सैमसन शायद किसी अन्य व्यक्ति की तरह

बनना चाहता था, लेकिन भगवान ने उसे ऐसा नहीं होने दिया। यहोवा उससे इतने समय के लिए ही अलग हुआ कि उसे उस स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जहाँ उसे अंततः अपनी बुलाहट पूरी करनी थी। उसे पकड़ लिया गया, अंधा कर दिया गया और पलिशती मंदिर में ले जाया गया।

डी। सैमसन की कहानी इज़राइल की कहानी के पुनर्कथन के रूप में जॉन मिल्टन "सैमसन एगोनिस्ट्स" में सैमसन के बारे में इस तरह से बात करते हैं: "ओह हमारी संपत्ति का दर्पण।" और बैरी वेब का कहना है कि जजों की किताब में सैमसन की कहानी जिस तरह से काम करती है, उसके संदर्भ में मिल्टन सही हैं। सैमसन की कहानी इज़राइल की कहानी है जिसे एक अकेले आदमी के जीवन में दोहराया गया और हमारे लिए केंद्रित किया गया है। यह वास्तव में वेब की थीसिस है: सैमसन की कहानी इज़राइल की कहानी है। चूँकि शिमशोन एक पवित्र व्यक्ति था, इस्राएल एक पवित्र राष्ट्र था (निर्गमन 19:6)। जैसे शिमशोन अन्य मनुष्यों के समान बनना चाहता था, वैसे ही इस्राएल अन्य राष्ट्रों के समान बनना चाहता था। जैसे शिमशोन विदेशी स्त्रियों के पीछे गया, वैसे ही इस्राएल विदेशी देवताओं के पीछे गया। जैसे शिमशोन ने अपनी चरम सीमा पर परमेश्वर को पुकारा और उसे उत्तर दिया गया, वैसे ही इस्राएल ने भी किया। अंत में—और यह न्यायाधीशों के दायरे से परे है—जैसे सैमसन को अपनी नियति के साथ समझौता करने से पहले अंधा करना पड़ा और गाजा के कड़वे दर्द के हवाले करना पड़ा, उसी तरह इज़राइल को बेबीलोन में निर्वासन की कड़वी पीड़ा से गुजरना पड़ा। तो आप देखिए वेब क्या सुझाव दे रहा है कि सैमसन की कहानी इज़राइल की कहानी को प्रतिबिंबित करती है।

इ। उपसंहार - सैमसन कहानी से जुड़ा दोहरा निष्कर्ष उपसंहार में, न्यायाधीशों की पुस्तक का दोहरा निष्कर्ष है, जैसे कि एक दोहरा परिचय है। न्यायियों 17:6 और 21:25 में आप पढ़ते हैं, "प्रत्येक मनुष्य ने वही किया जो उसकी दृष्टि में अच्छा था।" वेब का तर्क यह है कि सैमसन हर आदमी है। पुस्तक की संरचना में, सैमसन की कहानी उपसंहार की ओर ले जाती है। यह उपसंहार से ठीक पहले आता है; यह पुस्तक के प्रमुख न्यायाधीशों की कहानियों में से अंतिम है। न्यायियों 14:3 में जब शिमशोन चाहता था कि उसके माता-पिता उसे यह पलिशती स्त्री दिला दें, तो उसके

पिता और माता ने उत्तर दिया, 'क्या तेरे सम्बन्धियों में या हमारी सारी प्रजा में कोई स्वीकार्य स्त्री नहीं है? क्या तुम्हें पत्नी लाने के लिये खतनारहित पलिशतियों के पास जाना चाहिए?' लेकिन सैमसन ने अपने पिता से कहा, 'उसे मेरे लिए ले आओ।' फिर अगला वाक्यांश: एनआईवी कहता है, "वह मेरे लिए सही है।" तुम्हें पता है हिब्रू में वह क्या है? यह "वह मेरी नज़र में अच्छी है" - यह वही वाक्यांश है जैसे "हर किसी ने वही किया जो उसकी नज़र में अच्छा या सही था।" तो पुस्तक की संरचना में, सैमसन की कहानी उस उपसंहार की ओर ले जाती है जहाँ हर कोई वही कर रहा है जो उसकी अपनी नज़र में सही है; सैमसन बिल्कुल यही कर रहा था।

सैमसन, मुक्तिदाता और उद्धारकर्ता। पलिशतियों ने उसे पकड़ लिया था और न्यायियों 16:23-24 में दागोन की प्रशंसा कर रहे थे: " अब पलिशतियों के शासक अपने देवता दागोन के लिए एक बड़ा बलिदान चढ़ाने और यह कहते हुए जश्न मनाने के लिए इकट्ठे हुए, 'हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को बचा लिया है।' हमारे हाथ में।' जब लोगों ने उसे देखा, तो उन्होंने अपने देवता की स्तुति करते हुए कहा, 'हमारे देवता ने हमारे शत्रु को हमारे हाथ में कर दिया है, जिसने हमारी भूमि को उजाड़ दिया और हमारे मारे गए लोगों की संख्या बढ़ा दी । ' ' देवता; लेकिन जैसा कि वेब बताते हैं, यहां कहानी की नाटकीय विडंबना है। यह उनका देवता नहीं है जिसने सैमसन को उनके हाथों में दे दिया था, बल्कि यह इस्राएल का ईश्वर, यहोवा है, और उसने उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से ऐसा किया था। इसलिए अंत में यह उनके फायदे में नहीं रहने वाला है कि सैमसन उनके हाथ में आ गए हैं।

6 मुख्य मुद्दे: 1. यहोवा और देवताओं का मुकाबला; यहोवा की संप्रभुता और स्वतंत्रता

पुस्तक के केंद्र में दो मुद्दे हैं। एक इस्राएल की वफ़ादारी के लिए यहोवा और अन्य देवताओं के बीच प्रतिस्पर्धा है। सैमसन के साथ, जीत निर्णायक रूप से यहोवा के पास जाती है। शिमशोन की मृत्यु साबित करती है कि अन्य देवता बिल्कुल भी देवता नहीं हैं, और केवल यहोवा ही इस्राएल की भक्ति के योग्य है। दूसरा, कहानी यहोवा की संप्रभुता और स्वतंत्रता पर प्रकाश डालती है। ओथनील को छोड़कर सभी उद्धारकर्ता न्यायाधीश किसी न किसी रूप में वेब द्वारा "असंभावित नायक" कहे गए हैं। ये उस तरह के लोग नहीं हैं जिनके बारे में आप आमतौर पर सोचते होंगे कि

भगवान अपने लोगों को बचाने के लिए उनका इस्तेमाल करेंगे। न्यायाधीशों की पुस्तक में ईश्वर को सच्चे ईश्वर के रूप में प्रकट किया गया है जो मानव ज्ञान को भ्रमित करने वाले तरीकों से कार्य करता है, और सैमसन की कहानी इस तथ्य के लिए लेखक की सर्वोच्च गवाही है।

2. समापन चिंतन - पुजारियों का साम्राज्य समापन चिंतन: मुझे लगता है कि यहां तीन बिंदु हैं। सबसे पहले, निर्गमन 19:5-6 में एक पवित्र राष्ट्र के रूप में इस्राएल का आह्वान: "तू याजकों का राज्य, एक पवित्र जाति, देश देश के लोगों के बीच एक विशेष निज भूमि, और प्रभु की निज संपत्ति ठहरेगा।" इसे 1 पतरस 2:9 में ईसाइयों पर ईश्वर की नई वाचा के लोगों के रूप में लागू किया गया है। पतरस निर्गमन 19:5-6 को उद्धृत करता है और इसे नई वाचा के लोगों पर लागू करता है। वे पुराने नियम में पाए जाने वाले लोगों और नए नियम में पाए जाने वाले लोगों के बीच निरंतरता पर चलते हैं। वेब यहाँ क्या कहता है: "हम कॉर्पोरेट तौर पर जो हैं, वही व्यक्तिगत रूप से भी हैं। हमें संत बनने के लिए बुलाया गया है; अर्थात्, हमें संपूर्ण होने के लिए बुलाया गया है, हमें एक पवित्र राष्ट्र बनने के लिए बुलाया गया है, हमें एक पवित्र लोग बनने के लिए बुलाया गया है। हमें व्यक्तिगत रूप से भी पवित्र बनना है। पुराने नियम और नए नियम में परमेश्वर के लोगों की मौलिक बुलाहट के बीच इस निरंतरता के कारण, यह पूरी तरह से उचित है कि हम सैमसन में न केवल इज़राइल की कहानी देखें, बल्कि अपनी कहानी भी देखें। दूसरे शब्दों में, यदि सैमसन की कहानी इज़राइल की कहानी का प्रतिबिंब है, तो यह हमारी अपनी कहानी का भी प्रतिबिंब है। "यहाँ चुनौती यह है कि यदि हम बुलावे के द्वारा संत हैं तो हम अपने आह्वान को खुशी से स्वीकार करेंगे या नहीं। हमें आह्वान करके एक पवित्र लोग बनना है। हम दूसरे लोगों की तरह नहीं बन सकते और हमें भी ऐसा नहीं बनना चाहिए।"

3. विश्वास की प्रकृति दूसरे, सैमसन का नाम इब्रानियों 11:32 में आता है। "वह उस अध्याय में आस्था के नायकों में से एक है। उसके पास हमें आस्था की प्रकृति के बारे में सिखाने के लिए कुछ है। अपनी असफलता के बावजूद ऐसे क्षण आते हैं जब सैमसन जागरूकता दिखाता है कि दुनिया और उसके अस्तित्व के पीछे जो महान वास्तविकता है वह ईश्वर है, जिसका वह सेवक है। यह

न्यायाधीशों 15:18 में स्पष्ट रूप से सामने आता है जिसे मैं पहले ही पढ़ चुका हूँ। वह वहां कहते हैं, "आपने अपने सेवक को यह बड़ी जीत दिलाई है।" यहाँ वह महान विजय का श्रेय प्रभु को देता है। "वह खुद को पूरी तरह से भगवान पर छोड़ देता है, और इस बार हम उसे वफादार पाते हैं। सैमसन के बेहतरीन क्षण विश्वास के क्षण हैं जिनसे हम कई असफलताओं के बावजूद अभी भी बहुत कुछ सीख सकते हैं; और कभी-कभी वह एक अच्छा उदाहरण नहीं बल्कि एक बुरा उदाहरण होता है।"

4. उस व्यक्ति का चित्र जिसे यहोवा ने अपने लोगों को बचाने के लिए खड़ा किया था। तीसरा, यहाँ एक व्यक्ति या आकृति है जिसे यहोवा ने अपने लोगों को बचाने के लिए खड़ा किया था। और फिर यहाँ कुछ समानताओं पर ध्यान दें जो हमें बाद में पवित्रशास्त्र में मिलती हैं। उनके जन्म की घोषणा एक देवदूत ने की थी, उनका गर्भाधान चमत्कारी था - एक बांझ महिला से पैदा हुआ। वह अपने ही लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है - तभी इब्रानियों ने उसे जज 15:12 में पलिशतियों को सौंप दिया: "हम तुम्हें बाँधने और पलिशतियों को सौंपने आए हैं।" इसलिए उन्हें उनके अपने ही लोगों ने खारिज कर दिया। उसका बचाव कार्य उसकी मृत्यु में समाप्त होता है, एक ऐसी मृत्यु जिसमें वह डैगन को नीचे लाता है और भविष्य में भगवान के लोगों के उद्धार की नींव रखता है। दूसरे शब्दों में, इस सबसे असंभावित आंकड़े में हम संभवतः पुराने नियम में कहीं और की तुलना में आने वाली चीज़ों के आकार को अधिक स्पष्ट रूप से देखते हैं। "हमें सैमसन को केवल स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध चेतावनी तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए जो विश्वास का एक उदाहरण था। वह बहुत अधिक है। वह सभी के सबसे महान उद्धारकर्ता का अग्रदूत है, और कुछ मामलों में उसका जीवन मसीह के जीवन की ओर इशारा करता है और उस घटना को दर्शाता है। इसलिए मुझे लगता है कि वेब ने यहां उन तरीकों को इंगित करके हमारी अच्छी सेवा की है जिससे हम सैमसन से जुड़े इन कुछ कठिन आख्यानो से भी आज के लिए महत्व और अर्थ पा सकते हैं।

एच। इब्रानियों में सूचीबद्ध 4 न्यायाधीश 11:32 अब, मैं इसे केवल एक मिनट में समाप्त कर दूंगा। मैंने छह प्रमुख न्यायाधीशों में से चार के बारे में बात की है। उन चारों को इब्रानियों 11:32 में

सूचीबद्ध किया गया था। आपने वहां पढ़ा: “और मैं और क्या कहूं? मेरे पास गिदोन, बराक, सैमसन, यिप्तह, डेविड, सैमुअल और भविष्यवक्ताओं के बारे में बताने का समय नहीं है। लेकिन आप वहां उल्लिखित चार न्यायाधीशों को देखते हैं - गिदोन, बराक, सैमसन और यिप्तह। वे आस्था के नायकों के उस अध्याय में हैं। मैं सोचता हूं कि हम उनसे जो सीख सकते हैं वह यह है कि गंभीर विफलताओं के बावजूद ये चार व्यक्ति वे लोग हैं जिनका उपयोग प्रभु ने इस्राएल को उनके उत्पीड़कों से मुक्ति दिलाने के लिए किया था। व्यक्तिगत असफलताओं के बावजूद प्रभु ने उनका उपयोग किया क्योंकि वे उन लोगों को चुनौती देने के लिए विश्वास के साथ आगे आये जो परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार कर रहे थे। वेब पृष्ठ एक पर कहता है, “हमें इस पुस्तक के धार्मिक चरित्र को पहचानने और यह समझने की आवश्यकता है कि यह अपने विहित संदर्भ में कैसे कार्य करता है, और इसी तरीके से हम आज के लिए अर्थ ढूंढेंगे।”

4. न्यायाधीशों के समय में आध्यात्मिक और नैतिक पतन का चित्रण आइए मैं न्यायाधीशों को लपेटने का प्रयास करता हूँ। आइए आपकी रूपरेखा में 4. पर चलते हैं। 4. “न्यायाधीशों के समय में आध्यात्मिक और नैतिक गिरावट का चित्रण किया गया है।” वह अध्याय 17-21 है। यह दोहरा निष्कर्ष है जो दोहरे परिचय को प्रतिबिंबित करता है। हमें पुस्तक के अंत में दो कहानियाँ जुड़ी हुई मिलती हैं और वे 4ए हैं। और 4बी. 4ए है: “मीका का निजी अभयारण्य उसकी मूर्तियों और पुजारियों से लूट लिया गया है, न्यायाधीश 17-18।” फिर 4बी है: “बेंजामिन के खिलाफ गृहयुद्ध की कहानी जो लेवी की उपपत्नी के यौन शोषण और हत्या के कारण हुई थी।” वह न्यायाधीश 19-21 में है।

किताब के अंत में मिली इन दोनों कहानियों में किसी जज के नाम का जिक्र नहीं है। मुझे लगता है कि इन कहानियों का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि यहोशू की मृत्यु और विजय की पीढ़ी के बाद कितनी तेजी से धार्मिक गिरावट आई और लोग वाचा से दूर हो गए। यह इस खंड में है जहां आपको यह कथन चार बार मिलता है, “इज़राइल में कोई राजा नहीं था; हर किसी ने वही किया जो उनकी नज़र में सही था।” यह एक ऐसा समय था जब कोई केंद्रीय नागरिक प्राधिकरण नहीं था, और जब ऐसा था, तो लोग वाचा से दूर हो गए। परिणाम अराजकता था। इन दो कहानियों

में उस अराजकता का चित्रण किया गया है। एक कहानी धार्मिक धर्मत्याग को दर्शाती है और दूसरी कहानी नैतिक पतन को दर्शाती है।

एक। धार्मिक धर्मत्याग पर फोकस

तो पहली कहानी है "धार्मिक धर्मत्याग पर ध्यान"; वह मीका का निजी अभयारण्य, मूर्तियाँ और पुजारी है। यह जोशुआ के अधीन दिए गए नाजुक कब्जे से दानियों के प्रवास से जुड़ा है। वे उससे संतुष्ट नहीं थे। वे एक नई जगह ढूँढना चाहते थे और उन्होंने कुछ लोगों को यह जांच करने के लिए भेजा कि वे कहाँ जा सकते हैं। वे सुदूर उत्तर की ओर जाते हैं—न्यायाधीशों 18:7 को देखें: "तब वे पांच व्यक्ति चले गए और लैश में आए, जहाँ उन्होंने देखा कि लोग सिदोनियों की तरह, बिना किसी संदेह के और सुरक्षित रूप से रह रहे थे।" उनका मानना है कि यह दानियों के रहने के लिए एक अच्छी जगह होगी। उत्तर की ओर बढ़ने की उस प्रक्रिया में, आपने अध्याय 18 के पद 14 में पढ़ा, "तब उन पांच पुरुषों ने जो लैश देश का भेद लिया था, अपने भाइयों से कहा, 'क्या तुम जानते हो, कि इन घरों में से एक के पास एपोद है, और दूसरे के पास एपोद है।' घरेलू देवता, एक नक्काशीदार मूर्ति, और एक ढली हुई मूर्ति?" इसलिए वे मीका के स्थान पर युवा लेवी के घर गए। वे उसे नमस्कार करते हैं और वे इस घर में जाते हैं, पद 18, और एपोद और छवि और अन्य घरेलू देवताओं को लेते हैं। वे वहाँ के पुजारी को अपने साथ आने के लिए कहते हैं।

पद 23 पर जाएँ। वे इन मूर्तियों को मीका के इस निजी पवित्र स्थान से ले जाते हैं और जब वे चले जाते हैं, तो वे उनके पीछे चिल्लाते थे, दानियों ने मुड़कर मीका से कहा, 'तुम्हें क्या हुआ, जो तुमने अपना नाम पुकारा लड़ने के लिए पुरुष?' उसने उत्तर दिया, 'तुम मेरे बनाए हुए देवताओं और मेरे याजक को लेकर चले गए। मेरे पास और क्या है? आप कैसे पूछ सकते हैं, "तुम्हारे साथ क्या मामला है?"' तो यहाँ वह आदमी है जिसके पास एक नाजायज निजी अभयारण्य है, और ये दानी इन मूर्तियों को लेते हैं। वह बहुत परेशान है और इसलिए पूछता है, "मेरे पास और क्या है? आप कैसे पूछ सकते हैं कि मुझे क्या हुआ है?" लेकिन आप श्लोक 27 में पढ़ते हैं: "तब उन्होंने मीका ने जो कुछ बनाया था, उसे और उसके याजक को ले लिया, और शांतिपूर्ण और निडर लोगों के विरुद्ध

लैश की ओर चले गए। उन्होंने उन पर तलवार से हमला किया और उनके शहर को जला दिया।” याद रखें ये सभी इस्राएली थे। फिर पद 28, "उन्होंने नगर को फिर बसाया, और वहां बस गए, और उसका नाम दान रखा।" तो यहाँ इस निजी अभयारण्य में धार्मिक धर्मत्याग है जिसकी वस्तुएं लूट ली गईं।

बी। दूसरी कहानी गृहयुद्ध में समाप्त हुई दूसरी कहानी गृहयुद्ध में समाप्त हुई जो बेथलहम के एक लेवी की उपपत्नी के यौन शोषण और हत्या से शुरू हुई थी। मैं उस कथा पर नहीं जाऊँगा। यह इस महिला के साथ दुर्व्यवहार की एक क्रूर कहानी है, और फिर बिन्यामीन की जनजाति को लगभग नष्ट कर दिया गया है, क्योंकि जिस तरह से उन्होंने इस उपपत्नी के साथ व्यवहार किया था, उसके कारण इज़राइल की बाकी जनजातियों द्वारा इसे लगभग मिटा दिया गया था।

तो ये दो कहानियाँ कुछ हद तक उस अराजकता को दर्शाती हैं जिसके परिणामस्वरूप इज़राइल हुआ जब वे इस अंधेरे समय के दौरान वाचा से दूर हो गए।

एंड्रिया मस्तांगेलो और डोमिनिक गोबील द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
एलिजाबेथ फिशर
द्वारा अंतिम संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया